ISSN : 3048-6203 Volume -3| Issue -1| Jan - June 2026

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 40-55

शैक्षिक प्रसंगों के माध्यम से गिजुभाई बधेका की बाल–केंद्रित शिक्षा के सन्दर्भ मे संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेदनात्मक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रो. (डॉ.) वन्दना पूनिया
संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र
गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नॉलॉजी, हरियाणा, भारत
ईमेल : vbpunia@gmail.com

सारांश

यह शोध कहानियों एवं प्रसंगो के माध्यम से गिजुभाई की शैक्षिक विरासत का अन्वेषण करता है, जिसमें बालक–केंद्रित शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में उसके संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। गुणात्मक शोध का उपयोग करते हुए, गिजुभाई की प्रमुख कृति 'दिवास्वप्न', तथा संबंधित द्वितीयक स्रोतों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया। आंकड़ों के संग्रंण में प्रसंगो एवं कथानकों का सावधानीपूर्वक अध्ययन टिप्पणीकरण के माध्यम से किया गया, जिसके बाद खुले कोडिंग, वर्गीकरण और थीमैटिक विश्लेषण द्वारा संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को प्रतिबिंबित करने वाले प्रतिरूपों की पहचान की गई। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि गिजुभाई की शिक्षण पद्धति संज्ञानात्मक स्वायत्तता, रचनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल को प्रोत्साहित करती हैय सहयोग, सहानुभूति और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देती हैय तथा भावनात्मक कल्याण, आंतरिक प्रेरणा और आत्मीयता की भावना को पोषित करती है। यह शोध पत्र समकालीन शिक्षा में गिजुभाई के दर्शन की प्रासंगिकता को उजागर करता है, और यह इंगित करता है कि उनका दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षण व्यवहारों को दिशा देने में सक्षम है, जिससे सर्वांगीण, आत्मनिर्देशित और सामाजिक रूप से उत्तरदायी शिक्षार्थियों का विकास संभव हो सकता है।

मुख्य शब्दः गिजुभाई, बालक–केंद्रित शिक्षा, संज्ञानात्मक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, भावनात्मक कल्याण, कथानक, थीमैटिक विश्लेषण

1.1 परिचय

गिजुभाई बधेका की बाल केंद्रित शिक्षा भारतीय शिक्षा दर्शन के सिद्धांत और व्यवहार में एक विरासत के रूप में एक प्रेरणास्रोत रही है। उनकी अभिनव शिक्षण पद्धति, आनंददायक अधिगम वातावरण और समग्र दृष्टिकोण ने विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बेलव्विट :2018 ने अपने अध्ययन में रटंत और अधिकारवादी शिक्षण को अस्वीकार करते हुए बालक–केंद्रित शिक्षा को विश्व स्तर पर संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेदनात्मक विकास में गहन प्रभावकरी माना है. कुमार, 1991य देसाई, 2005 :बीसवीं सदी की प्रारंभिक भारतीय शिक्षा मुख्यतः रटने पर आधारित, कठोर और अनुशासनप्रधान थी। गिजुभाई बधेका :1932 ने इसे चुनौती देते हुए बालक–केंद्रित और नवोन्मेषी शिक्षण पद्धति अपनाई। उनका शैक्षिक दर्शन बालक के प्रति प्रेम, स्वतंत्रता और उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं का सम्मान पर आधारित था। उन्होंने ऐसे कक्षाओं की कल्पना की जहाँ जिज्ञासा, सृजनात्मकता और आत्म–अभिव्यक्ति सीखने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करें। गिज्जू भाई के अनुसार जिस अधिगम मे शिक्षार्थी की स्वतंत्रता , खुशी और व्यक्तिगत विशेषताओं का सम्मान शामिल है वही अधिगम प्रक्रिया वास्तविक है,

उनके विचार, भले ही बीसवीं सदी की शुरुआत में उत्पन्न हुए हों, आज के शैक्षिक दृष्टिकोणों के साथ गहराई से मेल खाते हैं, जो शिक्षार्थी की स्वायत्तता, अनुभवजन्य सीखने और सामाजिक–भावनात्मक विकास पर बल देते हैं। हालाँकि, उनके शिक्षाशास्त्रीय योगदान, विशेषकर संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेदनात्मक विकास से संबंधित पहलुओं का शोध अभी भी अपर्याप्त है। आज शैक्षिक शोध को ऐसे शोध की आवश्यकता है जिसमे यह विश्लेषण किया जाए कि गिज्जू भाई की बालक–केंद्रित शिक्षा निर्माणवाद, अनुभवजन्य अधिगम और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसी आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों के साथ कैसे संगत हैं और उनके सिद्धांतों को आज के कक्षाओं में किस प्रकार लागू किया जा सकता है। इस कथन को ध्यान में रखते हुए, इस शोध पत्र की सरंचना की की गई जो गिजुभाई बधेका की शैक्षिक विरासत की पुनः समीक्षा करती है, ताकि इसके समग्र बाल विकास पर प्रभाव और आधुनिक शिक्षण एवं अधिगम के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक आयामों के साथ इसकी संगति को समझा जा सके।

1.2 मुख्य उद्देश्यः

इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक प्रसंगों के माध्यम से गिजुभाई बधेका की शैक्षिक विरासत का अन्वेषण और विश्लेषण करना है.

विशेष रूप से :

- गिज्जू भाई की शैक्षिक विरासत के संज्ञानात्मक प्रभाव
- गिजुभाई की शैक्षिक विरासत का सामाजिक प्रभाव
- गिज्जू भाई की शैक्षिक विरासत के संवेदनात्मक ध्भावनात्मक प्रभाव

1.3 सैद्धांतिक ढांचा :

सैद्धांतिक ढांचा शोध का वह आधार है जो अध्ययन की दिशा निर्धारित करता है और शोध विषय से संबंधित प्रमुख सिद्धांतों और विचारों को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध गिजुभाई बधेका की बालक–केंद्रित शिक्षा और उसके संज्ञानात्मक, सामाजिक, और संवेदनात्मक ध्भावनात्मक प्रभावों का विश्लेषण करता है, सैद्धांतिक ढांचा इस प्रकार हैः यह अध्ययन गिजु भई के बाल–केंद्रित शिक्षा दृष्टिकोण के सैद्धांतिक आधार पर आधारित है, जो बच्चों के संपूर्ण विकास मन, ह्रदय और आत्मा पर जोर देता है। अध्ययन की रूपरेखा को प्रासंगिक शैक्षिक सिद्धांतों से पुष्ट किया गया है। जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत बच्चों की सीखने की प्रक्रियाओं को उनके विकासात्मक चरणों के अनुरूप समझने में मार्गदर्शक है। लेव वायगोत्स्की का सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि बालक का ज्ञान सामाजिक अंतःक्रिया, सहयोग और सांस्कृतिक अनुभवों के माध्यम से विकसित होता है। इसके अतिरिक्त, डेविड ऑसबेल का पूर्व ज्ञान पर आधारित शिक्षण सिद्धांत बच्चों के पूर्व ज्ञान और अनुभवों को नए ज्ञान से जोड़कर शिक्षा की प्रभावशीलता बढ़ाने की प्रक्रिया को समर्थित करता है। गिजु भई का दर्शन इन सिद्धांतों के साथ संगत है क्योंकि यह बच्चों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और सहानुभूति को प्राथमिकता देता है, और शिक्षकों को लोकतांत्रिक, सहायक और बाल–केंद्रित शिक्षण वातावरण सृजित करने के लिए मार्गदर्शित करता है। इस प्रकार, यह सैद्धांतिक रूपरेखा अध्ययन के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है और गिजु भई के दृष्टिकोण को आधुनिक भारतीय विद्यालय परिवेश में लागू करने की उपादेयता को स्पष्ट करती है।

1.4 शोध विधिः

प्रस्तुत शोध पत्र मे गुणात्मक शोध का प्रयोग किया गया है और शोध पद्धति कथात्मक अन्वेषण है। अध्ययन के प्राथमिक स्रोत गिज्जू भाई बधेका के प्रमुख लेखन दिवास्वप्न, जीवन विद्या, और बाल शिक्षा हैं, जिनमें उनके शिक्षण अनुभवों के अनेक कथात्मक प्रसंग शामिल हैं। ये कथाएँ उनके बालक–केंद्रित और आनंदमय शिक्षा दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती हैं और सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रायोगिक साक्ष्य प्रदान करती हैं। द्वितीयक स्रोत के रूप में भारतीय शैक्षिक दर्शन, संरचनावाद आधारित पुस्तकें, जर्नल लेख और शोध पत्र शामिल किए गए हैं। अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण सैम्पलिंग का उपयोग किया गया, ताकि ऐसे कथात्मक प्रसंग और ग्रंथ चुने जा सकें जो विशेष रूप से गिज्जू भाई की शैक्षिक प्रथाओं और दर्शन को प्रतिबिंबित करते हों। मुख्य जोर उन कथाओं और उदाहरणों पर है जो सीखने के संज्ञानात्मक, सामाजिक, और भावनात्मक आयामों को उजागर करते हैं। अध्ययन के लिए ग्रंथों और दस्तावेजीय सामग्रियों को सावधानीपूर्वक पढ़ा और संदर्भ सहित व्याख्या करने के बाद उन अंशों का चयन किया गया जो शैक्षिक अनुभव, शिक्षक–छात्र परस्पर क्रिया, और शिक्षण नवाचारों को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। साथ ही, संदर्भ, शैक्षिक परिवेश और मूलभूत सिद्धांतों के संबंध में टिप्पणियाँ संकलित की गईं।

1.5 आंकड़ों का विश्लेषणः

अध्ययन में थीमैटिक विश्लेषण या विषयगत विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया ताकि गिज्जू भाई की शैक्षिक दृष्टि के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक आयामों पर उसके समग्र प्रभाव को उजागर किया जा सके। प्रक्रिया की शुरुआत ओपन कोडिंग से हुई, जिसमें कथाओं से प्रारंभिक कोड जैसे कि जिज्ञासा, सहयोग और आनंद निकाले गए। इन कोडों को समानता के आधार पर समूहित किया गया, जिससे अनुभवात्मक सीखना, सामाजिक सहभागिता, और भावनात्मक समर्थन जैसी श्रेणियाँ बनीं। इसके बाद इन श्रेणियों को समेकित कर प्रमुख थीम्स विकसित किए गएः संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक जो बालक–केंद्रित शिक्षा के समग्र विकास को दर्शाते हैं। अंततः इन कोडों, श्रेणियों और व्यापक थीम्स के आपसी संबंध को स्पष्ट करने के लिए तालिका को तैयार किया गया। कथाओं और ग्रंथीय सामग्रियों का विश्लेषण गुणात्मक दृ ष्टिकोण से किया गया, जिसमें गिज्जू भाई की बालक–केंद्रित पद्धति को दर्शाने वाले प्रमुख विचार और अनुभव प्रारंभिक कोड के रूप में पहचाने गए। इन्हें व्यापक श्रेणियों में समूहीकृत किया गया और फिर संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक प्रभावों को प्रदर्शित करने वाली प्रमुख थीम्स में समेकित किया गया।

तालिका 1: गिज्जू भाई की शैक्षिक विरासत का थीमैटिक विश्लेषण /संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक आयामों में कोड, श्रेणियाँ और उदित विषयों का सम्बन्ध

आयाम	प्रारंभिक कोड	श्रेणियाँ/उदित विषय
संज्ञानात्मक विकास	/आत्म–निर्देशित सीखना करके सीखना/अनुभवजन्य अधिगम/ समीक्षात्मक और रचनात्मक चिंतन/ समस्या–समाधान कौशलध्प्रश्न करने की स्वतंत्रता	● जिज्ञासा और अन्वेषण ● प्रश्न करने की स्वतंत्रता ● अनुभवजन्य अधिगम/कर के सीखना ● चिंतन और तर्क कौशल ● समस्या–समाधान और समीक्षात्मक चिंतन
सामाजिक	सहयोग, सहभागिता/सहयोगात्मक कार्य, लोकतांत्रिक कक्षा/लोकतांत्रिक शिक्षण वातावरण,विचारों का सम्मान सामुदायिक सहभागिता. समानता और समावेशिता	● सहयोग और सहभागिता ● लोकतांत्रिक सहभागिता ● अन्य लोगों के विचारों का सम्मान ● सामुदायिक सहभागिता/संलग्नता.

भावात्मक/ संवेदनात्मक	आनंदपूर्ण अधिगम/खुशी के साथ सीखनाभय से मुक्ति/भयमुक्त वातावरण/शिक्षक–छात्र विश्वास/ भावनाओं की अभिव्यक्तिध्सुरक्षा और अपनापन/प्रेरणा और आंतरिक आनंद	● आनंदपूर्ण अधिगम/खुशी के साथ सीखना ● भयमुक्त वातावरण/भय से मुक्ति ● शिक्षक–छात्र विश्वास ● भावनाओं की अभिव्यक्ति ● अपनापन की अनुभूति और प्रेरणा

1.6 निष्कर्ष और सामान्यीकरणः

निष्कर्ष और सामान्यीकरण मे इस अध्ययन के निष्कर्ष गिज्जू भाई की बालक–केंद्रित शिक्षा के संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेदनात्मक ध्भावनात्मक विकास के बहुआयामी प्रभावों को उजागर करते हैं। यह निम्नलिखित हैंः

गिज्जू भाई की शैक्षिक विरासत के संज्ञानात्मक प्रभावः संज्ञानात्मक प्रभाव से तात्पर्य बच्चों के सोचने, समझने, सीखने और समस्या–समाधान करने की क्षमताओं से है। इसमें ज्ञान, समीक्षात्मक चिंतन, समस्या–समाधान, रचनात्मकता, स्मृति और मेटाकॉग्निशन समाविष्ट हैं। गिज्जू भाई की बालक–केंद्रित शिक्षा में बच्चे खेल, कथाएँ, पर्यवेक्षण और अन्वेषण के माध्यम से सीखते हैं, जिससे उनकी जिज्ञासा, समझ और स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन मिलता है। गिज्जू भाई बधेका का संज्ञानात्मक प्रभाव आधुनिक संरचनावादी शिक्षण सिद्धांतों के साथ मेल खाता है। गिजुभाई का विश्वास था कि वास्तविक अधिगम तभी संभव है जब बालक सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से संलग्न हों. वह प्रश्न करे, कर के देखे , खोजने का प्रयास करे। उनका संज्ञानात्मक विकास बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने, अपने परिवेश का अन्वेषण करने और अनुभवजन्य अधिगम में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। उनकी आत्मकथा दिवास्वप्न में कई कथाएँ इस बात को उजागर करती हैं कि उन्होंने जिज्ञासा, समस्या–समाधान कौशल और समीक्षात्मक चिंतन का पोषण किया। ये कथाएँ यह दर्शाती हैं कि गिज्जू भाई का बालक–केंद्रित दृष्टिकोण स्वतंत्र चिंतन, रचनात्मकता और समस्या–समाधान क्षमताओं को बढ़ावा देता है, जो बुद्धिमान और चिंतनशील शिक्षार्थी के निर्माण के लिए केंद्रीय हैं। उत्कृष्ट शोध परिणाम प्राप्त करने हेतु तालिका 1 के प्रारंभिक कोडों को संकलित कर विशिष्ट थीमों के रूप में वर्गीकृत किया गया, जिन्हें निम्नलिखित शीर्षक दिए गए हैंः

1. जिज्ञासा और अन्वेषण
2. अनुभवजन्य अधिगम
3. समस्या–समाधान और समीक्षात्मक चिंतन)
4. प्रश्न करने की स्वतंत्रता

1. जिज्ञासा और अन्वेषणः गिजुभाई का विश्वास था कि बालक तभी वास्तविक रूप से सीखते हैं जब उन्हें अपने परिवेश को प्रत्यक्ष रूप से देखने, प्रश्न करने और अन्वेषण करने का अवसर दिया

जाए। वे बालकों को तैयार उत्तर देने के बजाय उन्हें प्रकृति और जीवन की घटनाओं को स्वयं देखने–समझने हेतु प्रेरित करते थे।

- अवलोकन क्षमता और तर्कशील चिंतन का विकास : उनकी कृति दिवास्वप्न के एक प्रसंग में, विद्यालय के प्रांगण में उन्होंने बच्चों को चींटियों के व्यवहार का अवलोकन करने को कहा। बच्चे उनके चलने के ढंग, सहयोग और कार्य–विभाजन पर प्रश्न करने लगे और अपने–अपने अनुमानोंध हाइपोथीसिस का निर्माण किया। चींटियों का अवलोकन बच्चों को जैविक जीवन चक्र, पारिस्थितिकी तंत्र और सामाजिक संरचनाओं को समझने का अवसर प्रदान करता है, जो उनके संज्ञानात्मक विकास में सहायक है। इस प्रकार गिजुभाई ने बच्चों की अवलोकन क्षमता और तर्कशील चिंतन को विकसित किया।
- कथा और संवाद के माध्यम से शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक के रूप मेरू उनकी प्रसिद्ध कृति दिवास्वप्न में कथा और संवाद के माध्यम से प्रकट होता है कि शिक्षक एक मार्गदर्शक की भूमिका में है जो बालक की स्वाभाविक जिज्ञासा को उभरने में सहायता करता है, न कि सूचना थोपता है। पेड़ों का अवलोकन, वर्षा देखना, या छोटे जीव–जंतुओं का अध्ययन कृ ये सब गिजुभाई की "प्रकृति–आधारित शिक्षण प्रयोगशाला" के उदाहरण हैं, जहाँ सीखना "करते हुए", "खोजते हुए" और "चिंतन करते हुए" घटित होता है।
- कथा–वाचन पद्धति साहित्यिक होने के साथ–साथ संज्ञानात्मक : गिजुभाई की कथा–वाचन पद्धति साहित्यिक होने के साथ–साथ संज्ञानात्मक थी। दिवास्वप्न में वर्णित कक्षा–प्रसंगों में बच्चे कहानियाँ सुनते, दोहराते और अपने शब्दों में पुनः रचते थे। एक प्रसंग में शिक्षक ने बच्चों से जेम ब्समअमत श्रंबांस कहानी का वैकल्पिक अंत कल्पना करने को कहा। इससे उत्साहपूर्ण चर्चा हुई और बच्चों ने अनेक अंत प्रस्तुत किए, जिससे उनकी रचनात्मकता और नैतिक तर्कशीलता प्रकट हुई।
- निष्क्रिय अवलोकन को वैज्ञानिक अन्वेषण में रूपांतरित : एक अन्य प्रसंग में बच्चों ने विद्यालय के बगीचे में एक पक्षी का घोंसला देखा। गिजुभाई ने उन्हें उत्तर बताने के बजाय प्रतिदिन उसका अवलोकन करने और विवरण लिखने को कहा। बच्चों ने अंडों के रंग में परिवर्तन, चूजों के निकलने और माँ पक्षी के भोजन कराने की प्रक्रिया देखी। उन्होंने चित्र बनाए और कक्षा में अपने अनुभव साझा किए। यह अनुभव निष्क्रिय अवलोकन को वैज्ञानिक अन्वेषण में रूपांतरित करने का उदाहरण था।

इस प्रकार गिजुभाई की पद्धति में वर्गीकरण, अनुमान और निष्कर्ष जैसी संज्ञानात्मक क्षमताएँ बिना किसी औपचारिक वैज्ञानिक उपकरण के विकसित होती थीं। यह दृष्टिकोण आधुनिक प्रश्नोत्तरीकृत शिक्षणध खोज–आधारित अधिगम दृकी अवधारणा से मेल खाता है, जो दर्शाता है कि गिजुभाई की शिक्षण दृष्टि ने आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक चिंतन को उस समय प्रोत्साहित किया जब ऐसे शब्द शिक्षा–सिद्धांत में प्रचलित भी नहीं थे। यह दृष्टांत दर्शाते हैं कि गिजुभाई की शिक्षण पद्धति

प्रकृति और दैनिक जीवन को एक जीवंत प्रयोगशाला में बदल देती थी, जहाँ बच्चों की जिज्ञासा ज्ञान और समझ में परिणत होती थी।

2. अनुभवात्मक अधिगमः गिजुभाई बधेका का अनुभवात्मक अधिगम का दर्शन उनके अर्थपूर्ण शिक्षा दृष्टिकोण का केंद्रीय आधार था, जिसमें करते हुए सीखना मुख्य भूमिका निभाता था।

- प्रयोगों और खेल आधारित अन्वेषण को समझ का आधार : रटने और केवल याददाश्त पर आधारित अधिगम को उन्होंने अस्वीकार किया और इसके बजाय हाथों से करने वाली गतिविधियों, प्रयोगों और खेल आधारित अन्वेषण को समझ का आधार माना। इस दृष्टिकोण का स्पष्ट उदाहरण उनके विद्यालयीन दिनों की कथाओं में मिलता है, जहाँ बच्चे संतुलन, गुरुत्वाकर्षण और गति के सिद्धांतों को सरल मॉडल बनाकर अवलोकन और प्रयोग के माध्यम से समझते थे। भव्यनगर स्थित उनके दक्षिणामूर्ति बाल मंदिर में गिजुभाई अक्सर कक्षाओं को अनुभव की प्रयोगशालाओं में बदल देते थे। यहाँ छात्र भूगोल सीखते थे मिट्टी के नमूने इकट्ठा करके, गणित खेलों के माध्यम से और व्याकरण कहानी सुनाने या नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से। बच्चों को सरल मॉडल बनाने के लिए प्रेरित किया जाता ताकि वे संतुलन और गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत समझ सकें। वे प्रयोग, त्रुटि और अवलोकन के माध्यम से सीखते थे।
- मॉन्टेसरी पद्धति का प्रभाव और स्व–निर्देशित अन्वेषण : गिजुभाई पर मारिया मॉन्टेसरी का गहरा प्रभाव था, जिनकी विधियों को उन्होंने भारतीय संदर्भ में अनुकूलित किया, जहाँ स्व–निर्देशित अन्वेषण को औपचारिक निर्देशों पर प्राथमिकता दी गई। दिवास्वप्न में वे अपने विद्यालयीन दिनों का वर्णन करते हैं, जो व्यावहारिक और रचनात्मक गतिविधियों से भरे थे, न कि केवल व्याख्यान–आधारित। उदाहरण के लिए, छात्र वस्तुओं का तौल करना, माप करना और परिणामों की भविष्यवाणी करना सीखते थे। इस प्रकार की गतिविधियाँ उनके तार्किक तर्क और हाथों की दक्षता को विकसित करती थीं। भव्यनगर के बाल मंदिर में बच्चे अक्सर पत्थरों की गिनती, लकड़ियों की माप और पत्तों को समूहों में वर्गीकृत करने में लगे रहते थे। एक शिक्षक ने देखा कि जब बाद में बच्चों को संख्या और मापन का परिचय दिया गया, तो वे पहले से ही ष्अधिक, कम और बराबरष् जैसे संबंध समझ चुके थे
- जीवंत अनुभवों के माध्यम से सीखना : गिजुभाई के लिए शिक्षा केवल पाठ याद करने तक सीमित नहीं थीय बल्कि यह जीवंत अनुभवों के माध्यम से सीखने का साधन थी। उनका दृ ष्टांत प्रत्येक पाठ को वास्तविक जीवन का अनुभव बना देता था, जहाँ बच्चों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच विकसित होती थी। पाठ प्राकृतिक रूप से खेल और अनुभव से विकसित होते थे, न कि थोपे गए निर्देशों से। दिवास्वप्न में दिखाया गया है कि जब शिक्षा को बच्चों के दैनिक अनुभवों से जोड़ा जाता है कृ जैसे स्थानीय बाजार जाकर माप सीखना तो अधिगम अधिक अर्थपूर्ण और स्थायी बनता है। गिनती और तुलना करने की प्रक्रिया बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल जैसे वर्गीकरण, पैटर्न पहचान और तार्किक तर्क को सक्रिय करती है।आधुनिक

विकास मनोवैज्ञानिक, जैसे पियाजे और व्यगोत्स्की, ने बाद में इस अंतर्ज्ञान की पुष्टि की कि बच्चे सबसे बेहतर अपने वातावरण के साथ क्रियाशीलता और संपर्क के माध्यम से सीखते हैं।

3. समस्या–समाधान और आलोचनात्मक चिंतनः गिजुभाई बधेका समस्या–समाधान और आलोचनात्मक चिंतन को बालक की बौद्धिक वृद्धि के लिए अनिवार्य मानते थे। उन्होंने सीखने की प्रक्रिया को इस तरह संरचित किया कि बच्चे वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करें, जिनमें सक्रिय निर्णय–निर्माण और योजना की आवश्यकता हो, जैसे अपने परिवेश का संगठन करना या कक्षा संसाधनों का प्रबंधन। उनके दक्षिणामूर्ति बाल मंदिर में एक प्रसिद्ध प्रयोग में बच्चों को विद्यालय के बगीचे की योजना बनाने और उसका रखरखाव करने का कार्य सौंपा गया। बच्चों ने सहयोगात्मक रूप से योजना बनाई, उपयुक्त पौधों का चयन किया, पानी देने का कार्यक्रम तैयार किया और उनके विकास की निगरानी की। इस परियोजना के माध्यम से बच्चों ने पूर्वदृष्टि , टीमवर्क, समय प्रबंधन और जिम्मेदारी सीखी। शिक्षा इस प्रकार सैद्धांतिक निर्देश के बजाय व्यावहारिक जीवन सीखने में परिवर्तित हो गई।

गिजुभाई का मानना था कि स्वतंत्रता और तर्कशीलता तब विकसित होती है जब बच्चे संगठन, प्रश्न पूछना और प्रयोग करना सीखते हैं, न कि केवल तथ्यों को याद करने से। इस दृष्टिकोण से बच्चों में स्वायत्तता, विश्लेषणात्मक क्षमता और नैतिक जिम्मेदारी का विकास होता है। एक अन्य कथात्मक उदाहरण, जो वर्तमान में गुजरात के गिजुभाई–प्रेरित स्कूल से संग्रहित किया गया है, में बच्चों को कक्षा सामग्री का उपयोग करके एक साधारण पुल बनाने की चुनौती दी गई। शिक्षक ने निर्देश देने के बजाय पूछाः "हम कैसे कुछ बना सकते हैं जिससे खिलौना कार नदी पार कर सके?" बच्चों ने कागज, लकड़ी और मिट्टी का प्रयोग किया, स्थिरता, भार और संतुलन पर चर्चा की, और अंत में यह चिंतन किया कि क्यों कुछ पुल टूट गए जबकि कुछ मजबूत रहे। इस गतिविधि ने बच्चों में विश्लेषणात्मक सोच, पूर्वदृष्टि और स्वायत्तता को बढ़ावा दिया।

4. प्रश्न पूछने की स्वतंत्रताः गिजुभाई बधेका प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता को अर्थपूर्ण शिक्षा का एक मूल स्तंभ मानते थे। वे कठोर, परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा प्रणाली के कट्टर विरोधी थे, जो बच्चों की जिज्ञासा, प्रयोग और स्वतंत्र सोच को रोकती थी। बधेका का मानना था कि बच्चे तभी फलते–फूलते हैं जब उन्हें विचारों का अन्वेषण करने, सवाल पूछने और गलती करने का अवसर मिलता है, वह भी एक सहानुभूतिपूर्ण और सुरक्षित वातावरण में। भय और प्रतिस्पर्धा से मुक्त यह वातावरण बच्चों को गहन संज्ञानात्मक गतिविधियों में लगाता है।

- स्वतंत्र शिक्षण : उनका दृष्टिकोण, जो मॉन्टेसरी के सिद्धांतों से प्रभावित था, स्वतंत्र शिक्षण पर आधारित था, जिसमें कक्षा को एक लोकतांत्रिक स्थान बनाया जाता था। यहाँ बच्चों को चुनौती देने, बहस करने और अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, बिना किसी डर या डांट के। इस स्वतंत्रता ने न केवल संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा दिया

- मार्गदर्शित अन्वेषण : गिजुभाई की लिखाई और प्रयोग यह दर्शाते हैं कि जब बच्चों को सक्षम विचारक के रूप में सम्मानित किया जाता है, तो उनकी आत्मविश्वास और तर्कशीलता विकसित होती है। शिक्षक इस दृष्टिकोण में आधिकारिक या कठोर व्यक्ति नहीं बल्कि सुविधादाता होते हैं, जो ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जहाँ प्रश्न पूछना एक अधिकार और शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बन जाता है। एक कहानी में, एक बच्चे ने पूछा कि कुछ फूल अलग–अलग समय पर क्यों खिलते हैं। यह सवाल एक मार्गदर्शित अन्वेषण का कारण बना, जिससे बच्चों की वैज्ञानिक तर्कशक्ति और चिंतनशील सोच विकसित हुई।
- उत्साह और सक्रिय अधिगमः दक्षिणामूर्ति बाल मंदिर के एक शिक्षक के अनुभव के अनुसार, परंपरागत सांकेतिकध्ध डिक्टेशन परीक्षणों को सहयोगात्मक लेखन सत्रों से प्रतिस्थापित किया गया। इस गतिविधि में बच्चों ने ब्लैकबोर्ड पर साझा कहानी लिखी, जिसमें प्रत्येक बच्चे ने एक वाक्य जोड़ा। परिणामस्वरूप हास्य, त्रुटियाँ और कल्पना का मिश्रण उत्पन्न हुआ, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण परिणाम था उत्साह और सक्रिय अधिगम। इस प्रक्रिया ने बच्चों की वर्तनी और व्याकरण में भी तीव्र सुधार किया। गिजुभाई की कक्षा में भाव और संज्ञान का एकीकरण बच्चों की गलतियों को सीखने के अवसर में बदल देता हैध् विभिन्न शोध निष्कर्षों ने सिद्ध किया है त्रुटि बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है। कथाएँ यह स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि गिजुभाई की बालक–केंद्रित शिक्षाशास्त्र संज्ञानात्मक स्वायत्तता, रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक कौशल को सक्रिय रूप से विकसित करती है, जिससे आजीवन अधिगम का आधार बनता है। जिज्ञासा–प्रधान गतिविधियों और व्यावहारिक समस्या–समाधान को एकीकृत करके उनका दृष्टिकोण केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं, बल्कि बच्चे के बौद्धिक आत्मविश्वास को भी पोषित करता है। गिजुभाई की शिक्षा विरासत का संज्ञानात्मक प्रभाव केवल बेहतर शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चिंतनशील, कल्पनाशील और स्वतंत्र मन के विकास तक फैला है। उनकी कथाएँ दिखाती हैं कि जब बच्चों को अवलोकन, प्रश्न और निर्माण की स्वतंत्रता दी जाती है, तो वे दुनिया की अपनी समझ स्वयं निर्मित करते हैं। ऐसे वातावरण में सोचना आनंददायक और ज्ञान वास्तविक अनुभव बन जाता है कृ यही बालक–केंद्रित शिक्षा का सार है।

गिजुभाई की शैक्षिक विरासत का सामाजिक प्रभाव : सामाजिक प्रभाव से तात्पर्य शिक्षा के उन परिणामों से है जो बच्चे के सामाजिक अंतःक्रिया, संबंध और समाज की समझ पर पड़ते हैं। इसमें सहयोग, सहानुभूति, समावेशिता, संचार कौशल और सामाजिक जिम्मेदारी शामिल हैं। गिजुभाई बधेका की बालक–केंद्रित शिक्षा में ये सामाजिक प्रभाव तब दिखाई देते हैं जब बच्चे खेलते हैं, सहयोग करते हैं, जिम्मेदारियाँ साझा करते हैं और समूहगत गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे टीमवर्क, सम्मान और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास होता है। गिजुभाई के अनुसार शिक्षा एक गहन सामाजिक क्रिया थी एक ऐसा प्रक्रिया जिसमें बच्चे साथ जीते, साथ सीखते और साथ बढ़ते हैं। उनके लिए कक्षा केवल एक शैक्षणिक स्थान नहीं थी, बल्कि यह समाज का सूक्ष्म रूप थी,

जहाँ सहयोग, सहानुभूति और पारस्परिक सम्मान को विकसित किया जाना चाहिए। उन्होंने प्रतिस्पर्धा को सहयोग, पदानुक्रम को समानता और दंड को सहभागिता से प्रतिस्थापित किया। गिजुभाई की बालक–केंद्रित शिक्षण पद्धति बच्चों के सामाजिक विकास पर जोर देती है, जिसमें सहयोग, सहानुभूति और सामुदायिक भावना को पोषित किया जाता है। उनकी कथाएँ यह दिखाती हैं कि सीखना केवल व्यक्तिगत संज्ञानात्मक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि एक सामाजिक अनुभव भी है, जहाँ अंतरक्रिया, सहयोग और पारस्परिक सम्मान केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। शुरुआती कोडों को समेकित कर विशिष्ट विषयों में परिवर्तित किया गया है, जिन्हें निम्नलिखित शीर्षक दिए गए हैं:

1. सहयोग और सहयोगात्मक गतिविधियाँ
2. लोकतांत्रिक सहभागिता
3. अन्य के दृष्टिकोण का सम्मान
4. सामुदायिक जुड़ाव

1.सहयोग और सहभागिताः एक उदाहरण में, छात्रों को स्कूल के बगीचे में एक छोटा जल प्रणाली बनाने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रत्येक बच्चे की एक भूमिका थी, और सफलता पूरी टीमवर्क पर निर्भर थी। इससे सहयोग, साझा जिम्मेदारी और सामूहिक समस्या समाधान का विकास हुआ। एक गतिविधि में बच्चों से कहा गया कि वे मिलकर मिट्टी का एक गांव बनाएं। प्रत्येक बच्चे ने एक हिस्से की जिम्मेदारी लीकृतालाब, घर, पेड़ और जानवर। एक बच्चा, जो पहले खिलौने साझा करने से इनकार करता था, दूसरों को संगठित करने में नेता बन गया। अंत में पूरी टीम अपने "गांव" का जश्न एक सामूहिक निर्माण के रूप में मनाई। यह कथा व्यक्तिगतता से सहयोग की ओर बदलाव को दर्शाती है। साझा रचनात्मक कार्यों के माध्यम से बच्चे टीमवर्क, बातचीत, और साझा स्वामित्व के मूल्य सीखते हैं। सामाजिक संज्ञान तब विकसित होता है जब वे दूसरों के दृष्टिकोण को समझते हैं और एक सामान्य लक्ष्य की ओर समन्वय करते हैं। इस प्रकार गिजुभाई का दृष्टिकोण उस सामाजिक निर्माणवाद को बढ़ावा देता था, जिसे बाद में वाइगोत्स्की ने प्रस्तुत कियाकृयह विचार कि सीखना और सामाजिक सहभागिता अविभाज्य हैं।

2. लोकतांत्रिक सहभागिताः गिज्जू भाई ने कक्षा का ऐसा वातावरण बनाए रखा जहाँ बच्चों की राय को महत्व दिया जाता था। एक कहानी में, छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के विषय तय करने में भाग लिया। उनकी आवाज का सम्मान किया गया, जिससे उन्हें निर्णय लेने, बातचीत करने और लोकतांत्रिक रूप से भाग लेने का अनुभव मिला। सौराष्ट्र के एक गिज्जू भाई–प्रेरित स्कूल के एक शिक्षक ने बताया कि विभिन्न जातियों, लिंगों और आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे बिना भेदभाव के साथ खेलते और सीखते थे। एक घटना में, एक वंचित समुदाय का बच्चा सामने की पंक्ति में बैठने से हिचकिचा रहा था। एक अन्य बच्चे ने धीरे से कहा, "हम सब यहाँ साथ बैठते हैं।"

शिक्षक ने देखा कि समय के साथ, ऐसी स्वाभाविक समावेशिता कक्षा में एक सामान्य नियम बन गई। गिज्जू भाई का दृष्टिकोण मूल रूप से समानतावादी था। उन्होंने भेदभाव को अस्वीकार किया और माना कि शिक्षा को सामाजिक बाधाओं को तोड़ना चाहिए, उन्हें मजबूत करना नहीं। साझा अनुभवों और आपसी सम्मान को बढ़ावा देकर, उनकी शिक्षा प्रणाली ने लोकतांत्रिक सामाजिक मूल्यों का पोषण किया, उस समय से पहले ही जब "समावेशी शिक्षा" एक नीतिगत लक्ष्य बनी।

3. अन्य दृष्टिकोणों का सम्मानः यह सामाजिक जिम्मेदारी और सहभागी नेतृत्व को दर्शाता है। जब बच्चे भरोसा और जवाबदेही का अनुभव करते हैं, तो वे नागरिक मूल्यों जैसे निष्पक्षता, सहयोग और जिम्मेदारी को आत्मसात करते हैं। गिज्जू भाई की विधि ने बच्चों को सहभागी लोकतंत्र के लिए तैयार किया, जहाँ नेतृत्व थोपने की बजाय साझा होता है। समूह चर्चाओं और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को विभिन्न दृष्टिकोण सुनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। एक कहानी में बच्चों ने सहकारी खेल के दौरान आपसी संवाद करके संघर्ष को हल किया और निष्पक्ष समाधान निकाला, जिससे सहानुभूति और सामाजिक समझ का विकास हुआ। बच्चों को साप्ताहिक जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती थींकृखेल क्षेत्र की सफाई, शिक्षण सामग्री की व्यवस्था, या सुबह के गीतों का नेतृत्व करना। विफलता के लिए कोई दंड नहीं थाय इसके बजाय, समूह सामूहिक रूप से यह विचार करता था कि क्या गलत हुआ। समय के साथ, यहाँ तक कि शांत बच्चे भी कार्यों का नेतृत्व करने के लिए स्वयं आगे आने लगे।

दक्षिणामूर्ति कक्षा में, गिज्जू भाई ने रैंकिंग और पुरस्कार समाप्त कर दिए। इसके बजाय, बच्चों के कार्य सामूहिक रूप से दीवार पर प्रदर्शित किए जाते थे। एक बच्चे ने पूछा कि "क्यों किसी को 'सर्वश्रेष्ठ' नहीं घोषित किया गया।" गिज्जू भाई ने उत्तर दिया, "सर्वश्रेष्ठ वह है जो दूसरों को सीखने में मदद करता है।" जल्दी ही, बच्चे अपने स्वयं के उपलब्धियों का प्रदर्शन करने के बजाय पढ़ाई में संघर्ष कर रहे साथियों की मदद करने लगे। यह कथा गिज्जू भाई द्वारा सामाजिक गतिशीलता को प्रतिस्पर्धा से सहयोग और एकता की ओर बदलने को दर्शाती है। सफलता की पुनःपरिभाषा को साझा विकास के रूप में देखने से सहानुभूति और सामाजिक परिपक्वता का पोषण होता है। आधुनिक सहकारी शिक्षण सिद्धांत भी इस विचार को प्रतिध्वनित करते हैंः जब छात्र एक–दूसरे को प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि साझीदार मानते हैं, तो सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं।

4. सामुदायिक सहभागिता : सीखना अक्सर कक्षा की सीमाओं से बाहर फैलता था। उदाहरण के लिए, छात्र स्थानीय स्वच्छता अभियानों और सामुदायिक त्योहारों के आयोजन में मदद करते थे, जिससे उनके भीतर जिम्मेदारी और अपने परिवेश के साथ जुड़ाव की भावना पैदा होती थी। कहानी सुनाने के सत्रों के दौरान, बच्चे अक्सर मित्रता, सहानुभूति या न्याय पर आधारित कहानियों का अभिनय करते थे। एक शिक्षक याद करता है कि "दो मित्र और भालू" कहानी सुनने के बाद,

एक छात्र खेल के मैदान में हुए झगड़े में हस्तक्षेप किया और अपने साथियों को कहानी का संदेश याद दिलायाः "संकट में दोस्त एक–दूसरे की मदद करते हैं।" यह कथा दर्शाती है कि कहानियाँ नैतिक और सामाजिक उपकरण के रूप में कैसे कार्य करती हैं। गिज्जू भाई की शिक्षा में कहानी सुनाना एक मूल स्तंभ था, जो नैतिक और सामाजिक व्यवहार पर चिंतन को प्रोत्साहित करता था। कथात्मक पहचान के माध्यम से बच्चे सहानुभूति, सहयोग और न्याय के मूल्य सीखते थेकृन केवल व्याख्यानों से, बल्कि अनुभवजन्य भावनात्मक अनुभव के माध्यम से।ये उदाहरण दिखाते हैं कि गिज्जू भाई का शैक्षिक दृष्टिकोण सामाजिक सद्भाव, नैतिक मूल्य और सहयोगात्मक कौशल को बढ़ावा देता है, और बच्चों को अपने समुदाय में सकारात्मक रूप से संवाद करने के लिए तैयार करता है। दैनिक गतिविधियों में सामाजिक सीखने को शामिल करके, उनकी शिक्षा प्रणाली बच्चे की सहानुभूति, सहयोग और जिम्मेदार नागरिकता की क्षमता को मजबूत करती है। गिज्जू भाई ने स्कूल को एक सूक्ष्म समाज के रूप में देखा, जहाँ बच्चे सहयोग, सम्मान और सहानुभूति सीखते हैं। उन्होंने प्रतिस्पर्धा को सहयोग से बदल दिया, जिससे कक्षा में लोकतांत्रिक मूल्य बढ़े। समूह गतिविधियाँ, कहानी सुनाना और साथियों के साथ चर्चाएँ केवल शिक्षण विधियाँ नहीं थीं, बल्कि सामाजिक विकास के उपकरण थीं, जो बच्चों को सहभागी नागरिकता के लिए तैयार करती थीं सामाजिक समावेशन के एक अग्रणी के रूप में, गिज्जू भाई ने दलित सहित हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अपने दक्षिणामूर्ति स्कूल में आमंत्रित किया, शिक्षा को सामाजिक एकीकरण और समानता का साधन मानते हुए। उनकी कक्षाओं ने कठोर पदानुक्रमित संरचनाओं को समाप्त किया और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया, जिससे सभी बच्चोंकृजाति या सामाजिक–आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिनाकृमें समान महसूस करने की भावना विकसित हुई। यह समानता के प्रति प्रतिबद्धता आधुनिक नीतिगत ढाँचे के अनुरूप है, जो शिक्षा तक लोकतांत्रिक पहुँच और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखते हैं।

गिज्जू भाई की शैक्षिक विरासत के संवेदनात्मक/भावनात्मक प्रभावः संवेदनात्मक ध्भावनात्मक प्रभाव का अर्थ है शिक्षा का बच्चे की भावनाओं, आत्म–जागरूकता और भावनात्मक कल्याण पर पड़ने वाला असर। इसमें आत्म–विश्वास, भावनात्मक नियंत्रण, प्रेरणा और आनंद, सहानुभूति और करुणा, सुरक्षा की भावना आदि शामिल हैं। गिज्जू भाई की बालक–केंद्रित शिक्षा में ये भावनात्मक प्रभाव तब दिखाई देते हैं जब बच्चे सुरक्षित, सहायक और खेल–प्रधान वातावरण में सीखते हैं। ऐसा वातावरण बच्चों में खुशी, मानसिक लचीलापन और सकारात्मक आत्म–सम्मान को बढ़ावा देता है। गिज्जू भाई की शिक्षा का दर्शन इस तथ्य में गहराई से निहित था कि सीखना डर से नहीं, बल्कि आनंद से शुरू होता है और भावनात्मक सुरक्षा सभी बौद्धिक विकास की नींव है। उनके लेखन, विशेषकर दिवास्वप्न, कक्षाओं को ऐसे स्थान के रूप में चित्रित करते हैं जहाँ स्नेह अधिकार की जगह लेता है और जिज्ञासा बाध्यता की जगह लेती है। प्रारंभिक कोडों को संकलित कर विशिष्ट थीमों के रूप में वर्गीकृत किया गया, जिन्हें निम्नलिखित शीर्षक दिए गए हैंः

1. आनंदमय अधिगम
2. भय से मुक्त सुरक्षित वातावरण
3. शिक्षक और बालको के मध्य और स्नेहपूर्ण संबंध
4. भावनाओं की अभिव्यक्ति
5. अन्तर्निहित जुड़ाव की भावना

आनंदमय अधिगम : गिजुभाई की शिक्षा पद्धति में बच्चों को खेल, कहानी कहने और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। गिजुभाई की शिक्षा पद्धति का यह मूल सिद्धांत था कि भावनात्मक मुक्ति ही संज्ञानात्मक संलग्नता की पूर्वशर्त है। एक प्रसंग में देखा गया कि विद्यार्थी लोककथाओं का नाट्य रूपांतरण कर रहे थे, जिससे न केवल उनकी समझ बढ़ी बल्कि सीखने की प्रक्रिया भी आनंदमय और आंतरिक रूप से प्रेरक बन गई। बाल मंदिर की एक प्रारंभिक कक्षा में हरीश नामक एक बालक था, जिसे उसके पिछले विद्यालय में अधिक प्रश्न पूछने पर अक्सर डांटा जाता था। वह घर लौटकर चिंतित और मौन रहता था। गिजुभाई के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में उसे कहा गयाकृ "यदि तुम प्रश्न पूछना बंद कर दोगे, तो सीखना भी बंद हो जाएगा।" कुछ ही महीनों में हरीश ने आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त करने शुरू कर दिए और खेल–आधारित गतिविधियों में छोटे बच्चों की मदद भी करने लगा। यह प्रसंग इस बात को रेखांकित करता है कि भावनात्मक सुरक्षा जिज्ञासा और आत्म–अभिव्यक्ति को कैसे पोषित करती है। भय और दंड को हटाकर जब भरोसा और संवाद का वातावरण बनाया गया, तो बच्चे की आंतरिक प्रेरणा स्वतः विकसित हुई।

भय से मुक्तिः गिजुभाई ने दंड और कठोर अनुशासन को हतोत्साहित किया तथा इसके स्थान पर मार्गदर्शन और सौम्य सुधार को प्रोत्साहित किया। एक प्रसंग में उल्लेख है कि एक बालक ने कक्षा में प्रयोग करते समय गलती कर दी, परंतु उसे डांटा नहीं गया बल्कि पुनः प्रयास करने के लिए प्रेरित किया गया। इससे उसमें साहस और चुनौतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ। गुजरात के एक आधुनिक विद्यालय में, जो गिजुभाई के सिद्धांतों पर आधारित है, पाँचवीं कक्षा तक परीक्षाएँ नहीं होतीं। एक माँ ने बताया कि उसका बेटा, जो पारंपरिक विद्यालय में हमेशा चिंतित रहता था, अब प्रतिदिन विद्यालय जाने के लिए उत्सुक रहता है कृ "वह तो छुट्टियों में भी विद्यालय भाग जाता है," वह हँसते हुए बोलीं। शिक्षकों का मानना है कि यह उत्साह बच्चों को खेल और अन्वेषण के माध्यम से सीखने की स्वतंत्रता से उत्पन्न होता है।

यह उदाहरण दर्शाता है कि आनंद अधिगम का भावनात्मक प्रेरक बन जाता है। जब प्रदर्शन का बोझ हटा दिया जाता है, तो बच्चे अधिक गहराई से जुड़ते हैं और लंबे समय तक ध्यान केंद्रित करते हैं। खोज का आनंद भावनात्मक स्थिरता और सकारात्मक आत्म–संकल्प को सशक्त करता है।

शिक्षक–बालक विश्वासः गिजुभाई की कथाओं में शिक्षक और बालक के बीच स्नेहपूर्ण एवं विश्वासी संबंधों पर बार–बार बल दिया गया है। एक प्रसंग में एक बालक ने गिजुभाई से अपने व्यक्तिगत चिंताएँ साझा कीं, और गिजुभाई ने उसे सहानुभूति व आश्वासन देकर भावनात्मक सुरक्षा प्रदान की।

दक्षिणामूर्ति की एक शिक्षिका अपने अनुभव को साझा करती हैं कि उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे कभी "सामने खड़े होकर" न पढ़ाएँ, बल्कि कहानी सत्रों में बच्चों के बीच बैठें। वह लिखती हैं "मैं अब अनुशासन कराने वाली नहीं रही, बल्कि उनके आश्चर्य की सहभागी बन गई।" शिक्षिका ने अनुभव किया कि बच्चे अब उनके पास कर्तव्यवश नहीं, बल्कि स्नेह और जिज्ञासा से आने लगे।

गिजुभाई ने शिक्षक को एक "भावनात्मक सहारा" के रूप में देखा, न कि एक अधिकारवादी व्यक्तित्व के रूप में। यह संबंधात्मक परिवर्तन अधिगम प्रक्रिया को मानवीय बनाता है, जहाँ शिक्षक बालक की भावनात्मक दुनिया में सहभागी बनकर उसे मार्गदर्शन देता है। इस प्रकार की भावनात्मक तालमेल से विश्वास, सामाजिकता और नैतिक विकास को बल मिलता है।

भावनात्मक अभिव्यक्ति : गिजुभाई की शिक्षा पद्धति में बच्चों को कला, संगीत और संवाद के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर दिया जाता था। उदाहरणस्वरूप, एक सामूहिक गतिविधि में विद्यार्थियों ने ऋतु परिवर्तन को अपनी चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्त किया, जिससे वे सीखने की प्रक्रिया से भावनात्मक रूप से जुड़ सके। 'दिवास्वप्न' से प्रेरित एक प्रयोग में बच्चों को अपने घर की कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। एक बालक ने अपनी दादी की बीमारी का उल्लेख आँसुओं के साथ किया। शिक्षक ने उसकी भावनाओं को न टालते हुए उसे पूरा बोलने दिया। बाद में कक्षा ने उसी प्रसंग पर एक नाटक तैयार किया जिससे व्यक्तिगत पीड़ा सामूहिक अभिव्यक्ति में बदल गई।

यह उदाहरण बताता है कि कहानी कहना केवल शैक्षिक ही नहीं, बल्कि उपचारात्मक क्रिया भी है जो भावना और बुद्धि के बीच सेतु का कार्य करती है। कक्षा में भावनात्मक मान्यता न केवल संप्रेषण कौशल को विकसित करती है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और को भी सुदृढ़ करती है।

संबद्धता, बंधुता और प्रेरणा की भावना : कक्षा की गतिविधियाँ इस प्रकार बनाई जाती थीं कि प्रत्येक बालक सम्मिलित हो सके, जिससे समावेशिता और आत्म–मूल्य की भावना बढ़े। एक कथा में उल्लेख है कि बच्चे एक–दूसरे की सफलताओं का सामूहिक उत्सव मनाते थे, जिससे अपनत्व और पारस्परिक प्रोत्साहन की भावना विकसित हुई। दक्षिणामूर्ति मॉडल की एक शिक्षिका ने बताया कि बच्चे प्रतिदिन एक गोले में बैठकर अपने दिन की एक खुश और एक उदास घटना साझा करते थे। यह सरल किंतु प्रभावी अभ्यास विद्यार्थियों में सहानुभूति विकसित करता था। एक संकोची बालिका, जो शायद ही कभी बोलती थी, ने अपने परिवार से जुड़ी कहानियाँ साझा करनी शुरू कीं, और उसके सहपाठियों ने उसे सांत्वना दी। समय के साथ, कक्षा एक परस्पर देखभाल करने वाले समुदाय में परिवर्तित हो गई। इस प्रकार की संरचित किंतु भावनात्मक रूप से खुले

अभ्यासों से गिजुभाई की शिक्षा पद्धति ने भावनाओं को पहचानने, नाम देने और उन पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता को विकसित किया। गिजुभाई के लिए भावनात्मक कल्याण शिक्षा का परिणाम नहीं, बल्कि उसकी पूर्वशर्त था। भय से स्वतंत्रता, मौन से अभिव्यक्ति, और एकाकीपन से समुदाय की यात्रा यही बालक–केंद्रित शिक्षा का भावनात्मक मूल है। उन्होंने प्रत्येक बालक को विशिष्ट भावनाओं, विचारों और रुचियों वाला व्यक्ति माना, और यह रेखांकित किया कि उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं को समझना सृजनशीलता, आत्मविश्वास और संलग्नता के विकास के लिए आवश्यक है। गिजुभाई बधेका का यह दृष्टिकोण इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शिक्षा अनुशासन का अभ्यास नहीं, बल्कि बालक के मन और हृदय के सामंजस्य का उत्सव है।

वर्त्तमान समय में भारतीय परिवेश (जो की इतना विविध है) में उपादेयता : गिजु भई का बाल–केंद्रित दृष्टिकोण आज के भारतीय विद्यालयों में अत्यंत प्रासंगिक है और इसे विविध शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में लागू किया जा सकता है। उनकी शिक्षा प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों, रुचियों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए सीखने के अवसर प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण विद्यालयों में बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानी सुनाने और चित्रकला गतिविधियों में शामिल करने से सीखने की प्रक्रिया रोचक और अर्थपूर्ण बन सकती है, जबकि शहरी विद्यालयों में छात्र विज्ञान या सामाजिक अध्ययन के व्यक्तिगत प्रोजेक्ट चुन सकते हैं। बाल–केंद्रित दृ ष्टिकोण में प्रोजेक्ट आधारित लर्निंग और लोक कला का समावेश भी महत्वपूर्ण हैय जैसे गणित में ज्यामितीय आकृतियों को लोक चित्रकला के डिजाइन के माध्यम से समझाना, हिंदी में स्थानीय लोककहानियों पर नाटक करना, या कला में सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करना। सहानुभूति और सामाजिक कौशल को विकसित करने के लिए समूह कार्य, डिबेट और सामाजिक जागरूकता पर नाटक या पोस्टर बनाना उपयुक्त है। बच्चों की जिज्ञासा और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देने के लिए प्रयोगशालाओं में "कैसे?" और "क्यों?" प्रश्नों को प्राथमिकता दी जा सकती है और उन्हें स्वतंत्र प्रयोग करने के अवसर दिए जा सकते हैं। शिक्षक का मुख्य रोल मार्गदर्शक और सहायक होना चाहिए, जैसे कक्षा में "चाइल्ड–लीड डिस्कशन" आयोजित करना, जहां बच्चे स्वयं विषय चुनें और चर्चा का नेतृत्व करें। इसके अलावा, डिजिटल और तकनीकी संसाधनों का उपयोग बच्चों की सृजनात्मकता और सीखने की प्रक्रिया को और अधिक समृद्ध बना सकता है, जैसे स्थानीय सांस्कृ तिक कार्यक्रमों की वीडियो रिकॉर्डिंग तैयार कर उन्हें प्रस्तुत करना या ऑनलाइन क्विज और मल्टीमीडिया सामग्री का प्रयोग। इस प्रकार, गिजु भई का दृष्टिकोण न केवल बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है, बल्कि आधुनिक भारतीय विद्यालयों में सीखने को रोचक, लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने में भी प्रभावी है।

निष्कर्षः गिजु भई का बाल–केंद्रित शिक्षा का दृष्टिकोण आज के तीव्र परिवर्तनशील शैक्षिक परिदृ श्य में भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनकी विरासत पारंपरिक भारतीय ज्ञान और आधुनिक शैक्षिक सोच को जोड़ती है, और ऐसी शिक्षा का पक्षधर है जो संपूर्ण मन, हृदय और आत्मा को पोषित करे।

शिक्षा को यांत्रिक प्रक्रिया के बजाय आनंदमय यात्रा मानते हुए, उन्होंने इक्कीसवीं सदी की शिक्षा का मूल जिज्ञासा, सहानुभूति और रचनात्मकता पहले ही रेखांकित कर दिया था। उनका दृष्टिकोण शिक्षकों को लोकतांत्रिक, मानवकेंद्रित और बाल–केंद्रित शिक्षण वातावरण सृजित करने के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Badheka, G. (1921). *Divaswapna: A narrative of child-centered education*. Ahmedabad: Navjivan Press.
- Badheka, G. (1932). *Divaswapna*. Ahmedabad: Navjivan Publishing House.
- Badheka, G. (1937). *Jeevan Vidya*. Mumbai: Sastu Sahitya Vardhak Karyalaya.
- Bapodra, V. (2018). *Gijubhai Badheka: Prathmik Shiksha ke Prayog Purush*. Ahmedabad: RedShine Publications.
- Blewitt, C., Rump, K., Shelden, D., & Griffin, K. (2018). Social and emotional learning associated with universal curriculum-based interventions in early childhood education and care centers: A systematic review and meta-analysis. *JAMA Network Open, 1*(8), e185727. https://doi.org/10.1001/jamanetworkopen.2018.5727
- CASEL. (2020). *Framework for social and emotional learning*. Chicago, IL: Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning. https://casel.org/framework
- Dave, J. S. (1970). *Gijubhai Badheka: The shaper of child education in India*. New Delhi: National Book Trust.
- Desai, V. (2005). Gijubhai and child-centered education in India. *Indian Journal of Educational Studies, 12*(3), 45–58.
- Dewey, J. (1938). *Experience and education*. New York, NY: Macmillan.
- Gijubhai, P. (1992). *Divaswapna [The daydream]* (Original work published 1929). Navchetan Prakashan.
- Montessori, M. (1912). *The Montessori method*. New York, NY: Frederick A. Stokes Company.
- National Education Policy (NEP). (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education, Government of India. https://www.education.gov.in
- Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in society: The development of higher psychological processes*. Cambridge, MA: Harvard University Press.